उत्साह, अट नहीं रही है (सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला')

पाठ का परिचय

हिंदी-साहित्य में महाप्राण निराला क्रांतद्रष्टा कवि के रूप में जाने जाते हैं। उनके काव्य की भावधारा का एक छोर जहाँ छायावाद की कोमल भावना से बँधा है, वहीं दूसरा छोर प्रगतिवादी कविता का उत्स बना उनकी कवि-प्रतिभा का उद्घोष करता दृष्टिगत होता है। पाठ के रूप में संकलित **'उत्साह'** नामक कविता उनका एक आह्वान गीत है, जिसमें वे बादल को पीड़ित-प्यासेजन की आकांक्षा को पूर्ण करने वाले साधन के रूप में देखते हैं। कवि शोषित-पीड़ित जन को प्रेरित करने के लिए बादल का आह्वान करता है कि वह जीवन से हताश-निराश लोगों के मन में विध्वंस, विप्लव और क्रांति के अंकुर को प्रस्फुटित कर दे। इस गीत में कवि ने अपनी ललित कल्पना और क्रांति-चेतना दोनों का समन्वय करके सामाजिक क्रांति में साहित्य की महत्त्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित किया है।

पाठ में संकलित द्वितीय कविता **'अट नहीं रही है'** में कवि ने फागुन में व्याप्त वसंत की मादकता का वर्णन किया है। कवि फागुन की सुंदरता को अनेक संदर्भों में देखता है। कविता की सौम्य और ललित शब्दावली एवं अद्भुत लय ने कविता को भी फागुन की ही भाँति ललित सौंदर्य से भर दिया है।

कविताओं का भावार्थ

उत्साह

1. **बादल, गरजो!............फिर भर दो– बादल, गरजो!**

भावार्थ– उत्साह कवि का आह्वान गीत है। कवि बादल को संबोधित करते हुए कहता है कि हे बादल! गरजो। तुम सारे गगन को घेर लो। हे बादल, बालक के समान सुंदर दिखने वाले काले घुँघराले बादल, बच्चों की अनंत कल्पना के कोमल बादल! अपने हृदय में विद्युत् की छवि अंकित करने वाले बादल, नवजीवन देने वाले कवि के समान बादल! अपने अंदर के विद्युतरूपी वज्र को छिपाकर नई कविता की रचना कर दो। हे बादल! गरजो। आशय यही है कि कवि बादल का आह्वान करता हुआ कहता है कि वह अपनी गर्जना से दीन-हीन-शोषित और निरुत्साहित लोगों में उत्साह का संचार कर दे, जिससे फिर कोई उनके शोषण का साहस न कर सके और शोषितवर्ग युग के नव-निर्माण में अपना योगदान दे सके।

2. **विकल विकल,..............बादल, गरजो!**

भावार्थ– बादलों के छाने से पूर्व की दशा का वर्णन करते हुए कवि कहता है कि ग्रीष्म ऋतु में सभी लोग गरमी से अत्यधिक व्याकुल हो रहे थे। वे बड़े अनमने से थे। तभी विश्व की गरमी को दूर करने वाले, व्याकुल लोगों के मनों को शांत करने वाले अनंत बादल अज्ञात दिशा से आए। कवि प्रार्थना करता हुआ कहता है कि हे बादल! गरमी के कारण यह धरा (पृथ्वी) तप रही है, तुम इसे जल की वर्षा करके पुनः शीतल कर दो। हे बादल, गरजो।

अट नहीं रही है

3. **अट नहीं रही है .... पट नहीं रही है।**

भावार्थ–कवि फागुन का वर्णन करते हुए कह रहा है कि प्रकृति में फागुन की सुंदरता समा नहीं रही है, इसीलिए वह प्रकृति के कण-कण से फूट रही है। सब ओर प्रकृति का ऐसा रम्य रूप है कि उसकी शोभा (सुंदरता) तन में समा नहीं रही है। फागुन महीने अर्थात् वसंत ऋतु में मानव प्रसन्न दिखाई देता है। कवि कल्पना करते हुए फागुन को ही संबोधित करता हुआ कहता है कि सब ओर खिले पुष्पों से जो मंद सुगंध वातावरण में व्याप्त हो रही है, लगता है कि वह तुम्हारी सुगंधित साँस है, जिससे यह सृष्टिरूपी सारा घर भर गया है। धरती से लेकर आकाश तक सब ओर तुम्हारा ही सौंदर्य व्याप्त है, लगता है तुमने मुक्त आकाश में उड़ने के लिए अपने पंख खोल दिए हैं। सब तरफ़ तुम्हारी ऐसी मोहक छटा फैली है कि एक पल के लिए भी उससे मैं अपनी दृष्टि नहीं हटा पाता हूँ। अर्थात् मेरा मन एकटक दृष्टि से तुम्हें देखने के लिए व्याकुल है। मैं चाहकर भी तुम्हारी ओर से दृष्टि नहीं हटा पाता हूँ। वृक्षों की डालियाँ नूतन पत्तों से लद गई हैं। उनका रंग कहीं हरा तो कहीं लाल है। कहीं-कहीं वृक्ष सुगंधित पुष्पों से ऐसे लद गए हैं, जिसे देखकर ऐसा लगता है कि तुम्हारे गले में मादक गंधवाली फूलों की माला पड़ी हुई है। हे फागुन! तुम्हारी शोभा इतनी सुंदर है कि वह संपूर्ण पृथ्वी में भी समा नहीं रही है।

शब्दार्थ

धाराधर = बादल। **उन्मन** = अनमना। **निदाघ** = गरमी। **सकल** = सारे। **आभा** = चमक। **वज्र** = कठोर इंद्र का आयुध। **घोर** = भीषण। **पट नहीं रही** = समा नहीं रही है। **ललित** = सुंदर। **नूतन** = नई। **उर** = हृदय। **विकल** = परेशान। **अनंत** = जिसका अंत न हो, आकाश। **शीतल** = ठंडा। **अटना** = समाना। **पाट-पाट** = जगह-जगह। **शोभा-श्री** = सौंदर्य से भरपूर।

भाग-1

बहुविकल्पीय प्रश्न

काव्यांशों पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित काव्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

उत्साह

(1) बादल, गरजो!
घेर घेर घोर गगन, धाराधर ओ!
ललित ललित, काले घुँघराले,
बाल कल्पना के से पाले,
विद्युत-छवि उर में, कवि, नवजीवन वाले!
वज्र छिपा, नूतन कविता
फिर भर दो-
बादल, गरजो!

1. **कवि बादल से प्रार्थना कर रहा है–**
   (क) रिमझिम बरसने की
   (ख) घनघोर वर्षा की
   (ग) ज़ोरदार गर्जना करने की
   (घ) छाया करने की।
2. **बादल के हृदय में हैं–**
   (क) प्रेम की भावना (ख) विद्युत-छवि
   (ग) क्रोध की भावना (घ) निराशा की भावना।

3. **बादलों को किस रूप में प्रस्तुत किया गया है–**
(क) सौम्य रूप में (ख) भयानक रूप में
(ग) क्रांतिकारी रूप में (घ) बीभत्स रूप में।
4. **कवि ने बादलों को गर्जन करने के लिए क्यों कहा है–**
(क) वह लोगों को डराना चाहता है
(ख) उसे बादलों का गर्जन अच्छा लगता है
(ग) वह शोषितों में जोश और क्रांति की भावना भरना चाहता है
(घ) सोए लोगों को जगाना चाहता है।
5. **कौन-सी विशेषता बादलों की नहीं है–**
(क) ललित-ललित (ख) काले घुँघराले
(ग) धूमिल (घ) बाल कल्पना के पाले।

उत्तर— **1.** (ग) **2.** (ख) **3.** (ग) **4.** (ग) **5.** (ग)।

(2) विकल विकल, उन्मन थे उन्मन
विश्व के निदाघ के सकल जन,
आए अज्ञात दिशा से अनंत के घन!
तप्त धरा, जल से फिर
शीतल कर दो-
बादल गरजो! ***(CBSE 2016)***

1. **विकल और उन्मन कौन था–**
(क) विश्व के सभी लोग
(ख) चातक पक्षी
(ग) किसान
(घ) खेतों में काम करती स्त्रियाँ।
2. **अज्ञात दिशा से किसका आगमन हुआ–**
(क) वसंत का (ख) बादलों का
(ग) वर्षा का (घ) पक्षियों का।
3. **बादलों को 'अनंत के घन' क्यों कहा गया है–**
(क) बादल असंख्य होते हैं
(ख) वे विभिन्न रूप-रंग के होते हैं
(ग) बादलों का कोई ओर-छोर और निश्चित दिशा नहीं होती
(घ) बादल अनंत ईश्वर की उत्पत्ति हैं।
4. **बादलों से क्या प्रार्थना की गई है–**
(क) तपती हुई धरा को जल से शीतल करने की
(ख) पेड़-पौधों को हरा-भरा करने की
(ग) घनघोर वर्षा करने की
(घ) नवजीवन प्रदान करने की।
5. **काव्यांश में जल का प्रतीकात्मक भाव क्या है–**
(क) क्रांति व पौरुष का भाव (ख) सुख-शांति का भाव
(ग) नाद-सौंदर्य का भाव (घ) विश्वबंधुत्व का भाव।

उत्तर— **1.** (क) **2.** (ख) **3.** (ग) **4.** (क) **5.** (ख)।

अट नहीं रही है

(3) अट नहीं रही है
आभा फागुन की तन
सट नहीं रही है।
कहीं साँस लेते हो,
घर-घर भर देते हो,
उड़ने को नभ में तुम
पर-पर कर देते हो,
आँख हटाता हूँ तो
हट नहीं रही है।
पत्तों से लदी डाल
कहीं हरी, कहीं लाल,
कहीं पड़ी है उर में
मंद-गंध-पुष्प-माल,
पाट-पाट शोभा-श्री
पट नहीं रही है। ***(CBSE 2016)***

1. **काव्यांश में किसकी मादकता का वर्णन किया गया है–**
(क) वर्षा ऋतु की (ख) फागुन की
(ग) पुष्पों की (घ) ग्रीष्म की।
2. **'सट नहीं रही है' का अर्थ है–**
(क) दिख नहीं रही है (ख) चल नहीं रही है
(ग) समा नहीं रही है (घ) पकड़ी नहीं जा रही है।
3. **पत्तों से लदी डाल की क्या विशेषता है–**
(क) वह झुकी हुई है
(ख) वह कहीं हरी, कहीं लाल है
(ग) वह हवा से हिल रही है
(घ) वह सूख गई है।
4. **वृक्षों के गले में पड़ी माला की क्या विशेषता है–**
(क) वह पत्तों की बनी है।
(ख) उसके फूल मुरझा गए हैं।
(ग) वह मंदसुगंध वाले फूलों की है।
(घ) वह नीले रंग की है।
5. **'पर-पर कर देने' का अर्थ है–**
(क) उत्साह से भर देना (ख) दुःखी कर देना
(ग) पंख लगा देना (घ) पत्ता-पत्ता बिखेर देना।

उत्तर— **1.** (ख) **2.** (ग) **3.** (ख) **4.** (ग) **5.** (क)।

पाठ पर आधारित प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

1. **उत्साह किस प्रकार की रचना है–**
(क) श्रृंगारिक गीत (ख) लोकगीत
(ग) आह्वान गीत (घ) विरह गीत।
2. **कवि बादलों को बरसने के स्थान पर गरजने के लिए क्यों कहता है–**
(क) वह लोगों को डराना चाहता है
(ख) वह लोगों में क्रांति और जोश की भावना भरना चाहता है
(ग) वह लोगों की आवाज़ दबाना चाहता है
(घ) वह वर्षा ऋतु के आने की सूचना देना चाहता है।
3. **कवि ने बादलों को क्या-क्या कहा है–**
(क) ललित ललित, काले घुँघराले (ख) बाल कल्पना के से वाले
(ग) कवि, नवजीवन वाले (घ) ये सभी।
4. **कवि ने 'धाराधर' किसके लिए प्रयोग किया है–**
(क) वर्षा के लिए (ख) वसंत के लिए
(ग) नदी के लिए (घ) बादल के लिए।
5. **क्या नहीं अट रही है–**
(क) गीली मिट्टी (ख) धूल
(ग) फागुन की आभा (घ) गहरी खाई।
6. **विश्व के लोग विकल और उन्मन क्यों हैं–**
(क) अधिक वर्षा से (ख) अधिक गरमी से
(ग) बादलों की गर्जन से (घ) अत्यधिक ठंड से।

7. 'कहीं साँस लेते हो' का क्या आशय है–
(क) ज़ोर-ज़ोर साँस लेना
(ख) कभी-कभी साँस लेना
(ग) मंद और सुगंधित हवा का झोंका
(घ) किसी से प्राणवायु लेना।

8. फागुन का महीना किस ऋतु में आता है–
(क) शरद् ऋतु में (ख) ग्रीष्म ऋतु में
(ग) वर्षा ऋतु में (घ) वसंत ऋतु में।

9. 'उत्साह' कविता में किसका मानवीकरण किया गया है–
(क) हवा का (ख) नदी का
(ग) बादल का (घ) पर्वत का।

10. 'अट नहीं रही है' कविता का वर्ण्य विषय है–
(क) प्रकृति चित्रण (ख) ईश्वर-भक्ति
(ग) श्रृंगार चित्रण (घ) युद्ध वर्णन।

उत्तर— 1. (ग) 2. (ख) 3. (घ) 4. (घ) 5. (ग) 6. (ख) 7. (ग) 8. (घ) 9. (ग) 10. (क)।

भाग-2

वर्णनात्मक प्रश्न

काव्य-बोध परखने हेतु प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–*

प्रश्न 1 : 'उत्साह' कविता में कवि बादलों को फुहार, रिमझिम या बरसने के स्थान पर गरजने के लिए कहता है। क्यों? *(CBSE 2015)*

उत्तर : बादल की गर्जन में शोषण, अभाव और विवशता के विध्वंस के लिए विप्लव और क्रांति की चेतना परिलक्षित होती है। निराला जी ने इसीलिए बादल के गर्जन को क्रांति के बिंब के रूप में चयनित करते हुए उससे बरसने के स्थान पर गरजने के लिए कहा है; क्योंकि बरसने अर्थात् रोने से उसके शोषण, अभाव और विवशता का अंत नहीं होने वाला है।

प्रश्न 2 : 'उत्साह' कविता में बादल किन-किन अर्थों की ओर संकेत करता है? *(CBSE 2015)*

उत्तर : 'उत्साह' कविता में कवि ने बादल का निम्नलिखित अर्थों में प्रयोग किया है–
(i) अपने गर्जन-तर्जन अर्थात् आह्वान से हताश-निराश, शोषित और परतंत्र भारतीयों में उत्साह और क्रांति की भावना भरने वाले क्रांतिकारी के अर्थ में।
(ii) अपने अंदर निहित वज्र (शब्द शक्ति) से जीर्णता का विध्वंस कर नूतन कविता के सृजन से नवजीवन देने वाले कवि के अर्थ में।
(iii) अपनी शीतल जलधारा से तप्त धरा को शीतलता प्रदान करने वाले परोपकारी के अर्थ में।

प्रश्न 3 : फागुन में ऐसा क्या होता है, जो अन्य ऋतुओं से भिन्न है?

उत्तर : फागुन वसंत ऋतु का महीना है। यह समशीतोष्ण सुहावना मौसम होता है। फागुन मास में प्रकृति का सौंदर्य अपनी चरमसीमा पर होता है। चारों तरफ हरियाली का वातावरण है। पेड़-पौधे, रंग-बिरंगे फूलों एवं पल्लवों से लद गए हैं। शीतल, मंद, सुगंध पवन सुहावने मौसम की सृष्टि कर रहा है। सर्वत्र प्रफुल्लता, उल्लास एवं उत्साह का वातावरण है। फागुन के आगमन से प्रकृति नवजीवन से भर उठी है। उसका अनुपम सौंदर्य ही है, जो उसे अन्य ऋतुओं से भिन्न बना रहा है।

प्रश्न 4 : निराला जी ने अपनी कविता का शीर्षक 'उत्साह' क्यों रखा है? *(CBSE 2015, 16)*

***अथवा* 'उत्साह' किस प्रकार की रचना है?**

***अथवा* 'उत्साह' कविता के शीर्षक की सार्थकता तर्कसहित स्पष्ट कीजिए।** *(CBSE SQP 2021)*

उत्तर : उत्साह वीर रस का स्थायीभाव है, जो इस कविता की हर पंक्ति में समाहित है। यह कविता एक आह्वान गीत है। कविता में बादल एक तरफ पीड़ित-प्यासे जन की आकांक्षा को पूरा करने वाला है तो दूसरी तरफ़ वही बादल नई कल्पना और नए अंकुर के लिए विध्वंस, विप्लव और क्रांति-चेतना को संभव करने वाला है। आह्वान गीत उत्साह का प्रतीक है। बादल की गर्जना व क्रांति की चेतना लोगों में उत्साह का संचार करती है। कवि कविता के माध्यम से क्रांति लाने के लिए लोगों में उत्साह का संचार करना चाहता है। इसीलिए उन्होंने अपनी कविता का नाम 'उत्साह' रखा है। यह शीर्षक सर्वथा उचित है।

प्रश्न 5 : ''वज्र छिपा नूतन कविता फिर भर दो–बादल गरजो''–उत्साह कविता की इन पंक्तियों में कवि क्या कहना चाहता है? अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए। *(CBSE 2023)*

उत्तर : प्रस्तुत पंक्ति में बादल कवि का प्रतीक है। इस पंक्ति के द्वारा कवि यह कहना चाहता है कि जिस प्रकार बादल अपने अंदर छिपे वज्र (बिजली) से जीर्ण-शीर्ण वस्तुओं को नष्ट कर देता है, उसी प्रकार हे बादल रूपी कवि! तुम वज्र रूपी नवीन कविता से जीर्ण-शीर्ण परंपराओं और रूढ़ियों को नष्ट कर दो और समाज में नवीनता का सृजन करो।

प्रश्न 6 : कवि की आँख फागुन की सुंदरता से क्यों नहीं हट रही है? *(CBSE 2015)*

उत्तर : फागुन में प्राकृतिक सौंदर्य चरमसीमा पर है। वृक्षों की डालियाँ हरे और लाल पत्तों से लद गई हैं। पेड़ों ने फूलों की माला पहन ली है। चारों ओर मंद-सुगंध फैली है। वातावरण मादकता से भर गया है। यही कारण है कि कवि की आँख फागुन की सुंदरता से हटाए से भी नहीं हट रही है।

प्रश्न 7 : 'उत्साह' कविता में कवि ने नई कविता करने वाले कवियों के लिए किस संबोधन का प्रयोग किया है?

उत्तर : 'उत्साह' कविता में कवि ने नई कविता करने वाले कवियों के लिए 'कवि नवजीवन वाले' संबोधन का प्रयोग किया है; क्योंकि उसका मानना है कि सामाजिक क्रांति या परिवर्तन लाकर जीवन की दशा में सुधार लाने में कवियों की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है।

प्रश्न 8 : 'उत्साह' और 'अट नहीं रही है' कविताओं के आधार पर निराला के प्रकृति-चित्रण की विशेषता बताइए।

उत्तर : 'उत्साह' कविता में निराला एक जोशीले, गर्वीले एवं उत्साही कवि की भाँति बादलों से चारों ओर घूम-घूमकर लोगों के दुःखों एवं कष्टों को समाप्त करने का आह्वान करते हैं। 'अट नहीं रही है' कविता में उन्होंने प्रकृति के मानवीकरण द्वारा उसके सौंदर्य का मोहक चित्रण किया है। इन दोनों कविताओं में प्रकृति की कठोरता एवं कोमलता दोनों का अत्यंत सजीव चित्रण किया गया है।

प्रश्न 9 : कवि ने बादलों को किस आकांक्षा को पूरा करने वाला बताया है?

उत्तर : कवि ने बादलों को गरमी से पीड़ित-प्यासे लोगों की प्यास बुझाकर उन्हें शीतलता प्रदान करने की आकांक्षा को पूरा करने वाला, नई कल्पना एवं नए निर्माण के लिए क्रांति को संभव बनाने वाला बताया है। इस प्रकार कवि ने बादल से प्राणियों के जीवन में नई आशा और उत्साह का संचार करने के साथ-साथ संपूर्ण प्रकृति को नई उमंग एवं जोश से भरने की अपेक्षा की है।

प्रश्न 10 : कवि ने बादलों को 'मानव मन को सुख से भर देने वाले' क्यों कहा है? *(CBSE 2016)*

***अथवा* कवि को बादल मन को सुख देने वाले क्यों लगते हैं?**

उत्तर : कवि ने बादलों को 'मानव मन को सुख से भर देने वाले' इसलिए कहा है; क्योंकि जब बादल अपने हृदय में बिजली की चमक लिए बरसते हैं तो भयंकर गरमी से व्याकुल प्रत्येक प्राणी प्रसन्नता का अनुभव करता है और उनमें सुख का संचार होता है।

प्रश्न 11 : बादलों के लिए नवजीवन विशेषण का प्रयोग किस संदर्भ में किया गया है? *(CBSE 2016)*

उत्तर : बादल वर्षा कर के सभी को नवजीवन प्रदान करते हैं; क्योंकि वे तप्त धरती को शीतलता प्रदानकर मुरझाई एवं निष्प्राण धरती में नया जीवन भर देते हैं। वर्षा के कारण सब ओर हरियाली छाने पर लोगों में नई स्फूर्ति एवं उत्साह का संचार होता है और अन्नदाता किसान का जीवन उमंगों से भर जाता है।

प्रश्न 12 : 'उत्साह' कविता में बादलों के किस स्वरूप का वर्णन किया गया है? स्पष्ट कीजिए। *(CBSE 2016)*

उत्तर : 'उत्साह' कविता में बादलों के क्रांतिकारी स्वरूप का वर्णन किया गया है। इस कविता में बादल एक ओजस्वी कवि का प्रतीक है। कविरूपी बादल जब गरजेगा तो वातावरण में जोश, पौरुष और क्रांतिरूपी वर्षा होगी, जो समूचे संसार से ताप और कष्टों को हरकर उन्हें नया जीवन देगी। कवि चाहता है कि बादल हृदय में बिजली छिपाए अपनी जोश भरी गड़गड़ाहट से संपूर्ण संसार को नए जोश से भर दे।

प्रश्न 13 : 'उत्साह' कविता में निराला जी की कौन-सी विशेषता प्रकट होती है?

उत्तर : 'उत्साह' कविता में निराला जी का क्रांतिकारी एवं ओजस्वी व्यक्तित्व झलकता है। बादल उनकी कविताओं का मुख्य विषय रहा है। बादलों की भीषण गर्जना से उन्हें बहुत लगाव था। इससे उनकी पौरुषता का भी आभास होता है। वे गर्जन-तर्जन करके घुमड़-घुमड़कर बरसने वाले बादलों की तरह जन-जन पर छाना चाहते थे, उनके कष्टों को मिटाना चाहते थे। इससे कवि के करुणावान् होने का पता भी चलता है। इस कविता में बादलों की गर्जन में, उमड़-घुमड़ में धाराधर बरसने में उनके व्यक्तित्व के गुणों की ही छाप है। इससे पता चलता है कि महाप्राण निराला एक जोशीले, गर्वीले, पौरुष से पूर्ण करुणावान् कवि थे।

प्रश्न 14 : बादलों की गर्जना का आह्वान कवि क्यों करना चाहता है? 'उत्साह' कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए। *(CBSE 2018)*

उत्तर : बादल की गर्जना में कवि को शोषण, अभाव और विवशता के विध्वंस के लिए विप्लव और क्रांति की चेतना दिखाई पड़ती है। इसीलिए निराला जी ने बादलों की गर्जना का आह्वान किया है। वे वर्षों से परतंत्रता की नींद में सोए भारतीयों को जगाना चाहते हैं तथा उन शोषित, अभावग्रस्त और लाचार लोगों में क्रांति की भावना भरना चाहते हैं।

प्रश्न 15 : 'अट नहीं रही है' कविता के आधार पर वसंत ऋतु की शोभा का वर्णन कीजिए। *(CBSE 2019)*

***अथवा* 'अट नहीं रही है'–कविता में किसका वर्णन हुआ है और कवि ने उस सौंदर्य क बारे में क्या कहा है?** *(CBSE 2023)*

उत्तर : 'अट नहीं रही है'–कविता में वसंत का वर्णन हुआ है। वसंत ऋतुओं का राजा है। इसमें प्राकृतिक सुंदरता चरम पर होती है। मौसम सुहावना होता है। पेड़-पौधे, फल-फूलों से लद जाते हैं। मंद सुगंधित हवा बहती है। चारों ओर हरियाली फैल जाती है। आम के वृक्षों पर कोयल मधुर गीत गाती है। फूलों पर भौंरे मँडराते हैं। सभी प्राणियों में इतना उत्साह होता है; जैसे उनके पंख लग गए हों। वसंत की शोभा प्रकृति में समा नहीं पाती है।

प्रश्न 16 : 'अट नहीं रही है' कविता में 'उड़ने को नभ में तुम पर-पर कर देते हो' के आलोक में बताइए कि फागुन लोगों के मन को किस तरह प्रभावित करता है? *(CBSE 2020)*

उत्तर : फागुन का लोगों के मन पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। 'उड़ने को नभ में तुम पर-पर कर देते हो' पंक्ति के द्वारा कवि बताना चाहता है कि फागुन के महीने में लोगों के मन में इतना उत्साह भर जाता है; जैसे उनके पंख लग गए हों उनका मन करता है कि पंख लगाकर पक्षियों की तरह आकाश में उड़ जाएँ।

प्रश्न 17 : इस सत्र में पढ़ी गई किस कविता में फागुन के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन किया गया है? उसे अपने शब्दों में व्यक्त कीजिए। *(CBSE 2021)*

***अथवा* 'अट नहीं रही है'–कविता में कवि ने फागुन मास के सौंदर्य को किस प्रकार चित्रित किया है?** *(CBSE 2023)*

उत्तर : फागुन का महीना वसंत ऋतु में आता है। इस समय मौसम बहुत सुहावना होता है। न अधिक सरदी होती है और न अधिक गरमी। वृक्ष फल-फूलों से लद जाते हैं। चारों ओर सुगंध फैल जाती है। प्राणियों में इतना उत्साह होता है, मानों उन्हें पंख लग गए हैं। फागुन की सुंदरता ऐसी आकर्षक होती है कि यदि उससे आँख हटाना चाहें तो भी हटती नहीं है।

प्रश्न 18 : 'उत्साह' कविता के काव्य सौंदर्य पर प्रकाश डालिए। *(CBSE 2022 Term-2)*

उत्तर : 'उत्साह' कविता एक आह्वान गीत है। इसमें कवि निराला ने बादलों का मानवीकरण किया है। उन्होंने बादल को दो रूपों में प्रस्तुत किया है। एक रूप में वह हताश-निराश लोगों में अपनी गर्जना से उत्साह, जोश और क्रांति की भावना भरने वाला है। दूसरे रूप में वह गरमी से व्याकुल, थकित और प्यासे लोगों की प्यास बुझाने वाला है। कविता की भाषा भावानुकूल है। उसमें नाद सौंदर्य है। कविता में ओज गुण और वीर रस है।

प्रश्न 19 : निराला ने 'उत्साह' कविता के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन के क्या संदेश दिए हैं? *(CBSE 2022 Term-2)*

उत्तर : निराला ने 'उत्साह' कविता के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन के निम्नलिखित संदेश दिए हैं–

(i) सामाजिक परिवर्तन के लिए क्रांति आवश्यक है।

(ii) क्रांति के लिए उत्साह और जोश की भावना आवश्यक है।

(iii) लोगों में जोश और उत्साह भरने के लिए कवियों को शृंगार रस की नहीं, बल्कि वीर रस की कविताओं की रचना करनी चाहिए।

(iv) सामाजिक परिवर्तन के लिए जीर्ण-शीर्ण परंपराओं का विध्वंस आवश्यक है।

(v) समाज के कमज़ोर, शोषित और दलित वर्ग को सहानुभूति और सहायता की आवश्यकता है।

अभ्यास प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

विकल विकल, उन्मन थे उन्मन
विश्व के निदाघ के सकल जन,
आए अज्ञात दिशा से अनंत के घन!
तप्त धरा, जल से फिर
शीतल कर दो-
बादल गरजो!

1. **विकल और उन्मन कौन था–**
   (क) विश्व के सभी लोग (ख) चातक पक्षी
   (ग) किसान (घ) खेतों में काम करती स्त्रियाँ।
2. **अज्ञात दिशा से किसका आगमन हुआ–**
   (क) वसंत का (ख) बादलों का
   (ग) वर्षा का (घ) पक्षियों का।
3. **बादलों को 'अनंत के घन' क्यों कहा गया है–**
   (क) बादल असंख्य होते हैं
   (ख) वे विभिन्न रूप-रंग के होते हैं
   (ग) बादलों का कोई ओर-छोर और निश्चित दिशा नहीं होती
   (घ) बादल अनंत ईश्वर की उत्पत्ति हैं।
4. **बादलों से क्या प्रार्थना की गई है–**
   (क) तपती हुई धरा को जल से शीतल करने की
   (ख) पेड़-पौधों को हरा-भरा करने की
   (ग) घनघोर वर्षा करने की
   (घ) नवजीवन प्रदान करने की।
5. **काव्यांश में जल का प्रतीकात्मक भाव क्या है–**
   (क) क्रांति व पौरुष का भाव
   (ख) सुख-शांति का भाव
   (ग) नाद-सौंदर्य का भाव
   (घ) विश्वबंधुत्व का भाव।

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

6. **उत्साह किस प्रकार की रचना है–**
   (क) श्रृंगारिक गीत (ख) लोकगीत
   (ग) आह्वान गीत (घ) विरह गीत।
7. **कवि ने 'धाराधर' किसके लिए प्रयोग किया है–**
   (क) वर्षा के लिए (ख) वसंत के लिए
   (ग) नदी के लिए (घ) बादल के लिए।
8. **'अट नहीं रही है' कविता का वर्ण्य विषय है–**
   (क) प्रकृति चित्रण (ख) ईश्वर-भक्ति
   (ग) श्रृंगार चित्रण (घ) युद्ध वर्णन।

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–*

9. **'उत्साह' कविता में बादल किन-किन अर्थों की ओर संकेत करता है?**
10. **फागुन में ऐसा क्या होता है, जो अन्य ऋतुओं से भिन्न है?**
11. **कवि ने बादलों को 'मानव मन को सुख से भर देने वाले' क्यों कहा है?**
12. **'उत्साह' कविता के काव्य सौंदर्य पर प्रकाश डालिए।**